प्रारंभिक परीक्षा

रुपया निचले स्तर पर पहुंचा, REER सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंची

संदर्भ

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले अवमूल्यन के बावजूद, **रुपए का वास्तविक प्रभावी विनिमय दर(REER) सूचकांक नवंबर 2024 में 108.14 के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया, जो 'वास्तविक प्रभावी' संदर्भ में इसके मूल्य में वृद्धि को दर्शाता है।**

वर्तमान परिदृश्य में योगदान देने वाले कारक

- **वैश्विक डॉलर की मजबूती:** डॉलर में निम्नलिखित कारणों से वृद्धि हुई है:
  - अमेरिकी नीतियां आयात पर टैरिफ वृद्धि, कर कटौती और अन्य मुद्रास्फीति उपायों का समर्थन करती हैं।
  - अमेरिकी बांड पर प्राप्त होने वाले लाभ में वृद्धि से वैश्विक पूंजी आकर्षित हो रही है।
- **रुपये का अवमूल्यन:** डॉलर के मुकाबले रुपये का नाममात्र कमजोर होना आंशिक रूप से पूंजी बहिर्वाह और प्रमुख व्यापारिक साझेदारों की तुलना में उच्च घरेलू मुद्रास्फीति के कारण है।

प्रभावी विनिमय दर (EER) के बारे में -

- **EER कई विदेशी मुद्राओं के भारित औसत के सापेक्ष किसी देश की मुद्रा मूल्य का माप है।**
- यह भारत के प्रमुख व्यापारिक साझेदारों की मुद्राओं की तुलना में रुपये की विनिमय दरों के भारित औसत का सूचकांक है।
- मुद्रा भार भारत के कुल विदेशी व्यापार में अलग-अलग देशों की हिस्सेदारी से प्राप्त होता है

EER के 2 प्रकार है: NEER और REER

- **नाममात्र प्रभावी विनिमय दर (NEER):**
  - **यह मुद्रास्फीति को समायोजित किए बिना वैश्विक मुद्राओं की टोकरी के मुकाबले रुपए के मूल्य को मापती है।**
  - भारतीय रिजर्व बैंक ने दो बास्केट के लिए NEER सूचकांक तैयार किया है: एक बास्केट में 6 मुद्राएं (अमेरिकी डॉलर, यूरो, चीनी युआन, पाउंड, येन और हांगकांग डॉलर) तथा दूसरा बास्केट में 40 मुद्राएं हैं।
  - NEER सूचकांक 2015-16 के लिए 100 के आधार वर्ष मूल्य के संदर्भ में हैं।
  - NEER में वृद्धि रुपये के प्रभावी मूल्यवृद्धि (आयात सस्ता करना लेकिन निर्यात कम प्रतिस्पर्धी बनाना) को दर्शाती है, जबकि कमी अवमूल्यन (निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना लेकिन आयात को अधिक महंगा बनाना) को दर्शाती है।
- **वास्तविक प्रभावी विनिमय दर (REER):**
  - **यह भारत और उसके व्यापारिक साझेदारों के बीच मुद्रास्फीति के अंतर के लिए NEER को समायोजित करती है।**
  - 100 से ऊपर REER यह दर्शाती है कि घरेलू मुद्रा अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में अधिक मूल्यवान और अधिक महंगी है।
  - **REER में किसी भी वृद्धि का मतलब है कि भारत से निर्यात किए जा रहे उत्पादों की लागत देश में आयात की कीमतों से अधिक बढ़ रही है। इसके परिणामस्वरूप व्यापार प्रतिस्पर्धात्मकता में कमी आती है (लंबे समय में हानिकारक)।**

संघ लोक सेवा आयोग के विगत वर्ष के प्रश्न

प्रश्न: भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2022)

1. नाममात्र प्रभावी विनिमय दर (NEER) में वृद्धि रुपये के मूल्य में वृद्धि का संकेत देती है।
2. वास्तविक प्रभावी विनिमय दर (REER) में वृद्धि व्यापार प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार का संकेत देती है।
3. अन्य देशों की तुलना में घरेलू मुद्रास्फीति में बढ़ती प्रवृत्ति के कारण NEER और REER के बीच विचलन बढ़ने की संभावना है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर (**c**)

स्रोत:

- **इंडियन एक्सप्रेस - रुपया निचले स्तर पर, REER सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंची**

भारत-म्यांमार सीमा मुक्त आवागमन व्यवस्था

संदर्भ

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भारत और म्यांमार के बीच सीमा के दोनों ओर 10 किलोमीटर के दायरे में रहने वाले लोगों की आवाजाही को विनियमित करने के लिए नया प्रोटोकॉल लाया है।

म्यांमार के साथ मुक्त आवागमन व्यवस्था (FMR) के बारे में -

- **FMR भारत और म्यांमार के बीच 1968 में स्थापित एक द्विपक्षीय समझौता है**, जो पारिवारिक और जातीय संबंधों के कारण **सीमा की एक निश्चित दूरी के निवासियों को स्वतंत्र रूप से सीमा को पार करने की अनुमति देता है।**
    - **मिज़ो, कुकी और चिन, जिन्हें सामूहिक रूप से ज़ो लोग** (सीमा के दोनों ओर) के नाम से जाना जाता है, एक समान वंश और मजबूत जातीय संबंध साझा करते हैं।

- **भारत और म्यांमार की सीमा 1643 किमी लंबी है।** (काफी हद तक बिना फेंसिंग वाली) जो **4 भारतीय राज्यों - अरुणाचल प्रदेश**, **नागालैंड**, **मणिपुर और मिजोरम** से होकर गुजरती है।
- **वर्तमान घटनाक्रम**
    - **FMR का निलंबन:** फरवरी 2023 में केंद्रीय गृह मंत्री ने घोषणा की कि आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने और पूर्वोत्तर राज्यों की जनसांख्यिकीय संरचना को बनाए रखने के लिए FMR को निलंबित कर दिया गया है।
    - **लंबित अधिसूचना**: FMR को समाप्त करने की औपचारिक अधिसूचना, जिसके लिए विदेश मंत्रालय की मंजूरी की आवश्यकता है, अभी भी प्रतीक्षित है।
    - हाल ही में गृह मंत्रालय ने लोगों की आवाजाही को नियंत्रित करने के लिए नए दिशानिर्देश जारी किए हैं।
- **FMR से संबंधित चिंताएं:**
    - **सुरक्षा जोखिम**: विद्रोहियों और आतंकवादियों द्वारा बिना किसी पहचान के सीमा पार करने के लिए अप्रतिबंधित आवागमन का फायदा उठाया जाता है।
    - **अवैध गतिविधियाँ**: सीमा पार माल, मादक पदार्थों और हथियारों की तस्करी।
    - **निगरानी में चुनौतियां:** मुक्त आवागमन के कारण सीमा सुरक्षा बलों के लिए निगरानी करना तथा नियमित समुदाय के सदस्यों और अवैध गतिविधियों में संलग्न लोगों के बीच अंतर करना कठिन हो जाता है।

सीमा पार आवागमन के लिए नए दिशानिर्देश -

- **सीमा में कमी**: मुक्त आवागमन की प्रादेशिक सीमा घटाकर 10 किमी कर दी गई है।
- **सीमा पास प्रणाली:** सीमा पार करने वाले निवासियों को असम राइफल्स (प्राथमिक सुरक्षा बल) द्वारा जारी सीमा पास प्राप्त करना होगा। यह पास म्यांमार में 7 दिनों तक रहने की अनुमति देगा।
- **भारत में प्रवेश की प्रक्रियाएँ**:
    - **आगंतुकों को:** निर्दिष्ट सीमा बिंदुओं पर रिपोर्ट करना होगा, एक फॉर्म भरना होगा और दस्तावेज़ जांच, सुरक्षा जांच और स्वास्थ्य निरीक्षण से गुजरना होगा।

- जानकारी भारत-म्यांमार सीमा पोर्टल पर अपलोड की जाएगी।
- एक तस्वीर और क्यूआर कोड के साथ एक सीमा पास जारी किया जाएगा और प्रस्थान पर उसी बिंदु पर वापस किया जाना चाहिए।

स्रोत:

- **द हिंदू - केंद्र ने अभी तक औपचारिक रूप से FMR को खत्म नहीं किया है**

बेलगावी अधिवेशन का शताब्दी वर्ष समारोह

संदर्भ

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) 1924 के बेलगावी अधिवेशन के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में कर्नाटक के बेलगावी (पूर्व में बेलगाम) में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित कर रही है।

1924 के बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन के बारे में -

- **यह कांग्रेस का 39वां अधिवेशन था और महात्मा गांधी की अध्यक्षता वाला एकमात्र अधिवेशन था।**
- इस सत्र में जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, सरोजिनी नायडू और खिलाफत आंदोलन के नेता मुहम्मद अली और शौकत अली और कई अन्य सहित कई वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने भाग लिया।
- **महत्व:**
    - इस सत्र के दौरान, गांधी ने अहिंसा और सांप्रदायिक सद्भाव पर अपने विचार प्रस्तुत किए।
    - महात्मा गांधी ने अपने **'स्वराज'** और **'सर्वोदय'** के स्वप्न की भी चर्चा की।
    - छुआछूत के विरुद्ध अलग-अलग सम्मेलन आयोजित किये।
    - हिंदू-मुस्लिम एकता, सशुल्क सामाजिक सेवा और खादी कताई को अनिवार्य बनाने पर जोर देने के लिए मजबूत प्रस्ताव पारित किए गए।

महत्वपूर्ण कांग्रेस अधिवेशन और उनके अध्यक्ष

- **1885: डब्ल्यू.सी. बनर्जी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन।**
- **1888**: **जॉर्ज यूल** - प्रथम अंग्रेजी अध्यक्ष
- **1905: गोपाल कृष्ण गोखले** - स्वदेशी आंदोलन की औपचारिक घोषणा
- **1906: दादाभाई नौरोजी** - चार प्रस्ताव पारित किए: स्वराज (स्वशासन), बहिष्कार आंदोलन, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा
- **1907: रास बिहारी घोष - कांग्रेस में विभाजन - नरमपंथी और गरमपंथी।**
- **1916: ए.सी. मजूमदार - कांग्रेस के दो गुटों - नरमपंथी और गरमपंथी - के बीच एकता तथा कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच लखनऊ समझौता।**
- **1917: एनी बेसेंट** - कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष
- **1925: सरोजिनी नायडू** - पहली भारतीय महिला अध्यक्ष
- **1929: जवाहर लाल नेहरू - 'पूर्ण स्वराज' पर प्रस्ताव पारित किया।**
- **1931: वल्लभभाई पटेल** - मौलिक अधिकारों और राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम पर प्रस्ताव।

स्रोत:

- इंडियन एक्सप्रेस - कांग्रेस बेलगावी सत्र की तैयारी में जुटी

केन-बेतवा लिंक परियोजना

संदर्भ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने **केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना** की आधारशिला रखी**,** जिसका **उद्देश्य बुंदेलखंड क्षेत्र की जल समस्या का समाधान करना है।**

केन-बेतवा लिंक परियोजना (KBLP) के बारे में -

- **KBLP का उद्देश्य केन नदी से अतिरिक्त जल को बेतवा नदी में स्थानांतरित करना है। ये दोनों ही यमुना की सहायक नदियाँ हैं।**
- यह राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (1980) के तहत पहली इंटरलिंकिंग परियोजना है।
- **घटक**:
    - **केन-बेतवा लिंक नहर:** जल को मोड़ने के लिए 221 किमी लंबाई (2 किमी सुरंग सहित)।
    - **चरण-I**: **दौधन बांध**, संबंधित सुरंगों, नहर और बिजलीघरों का निर्माण।
    - **चरण-II**: **लोअर ओर्र बांध**, **बीना कॉम्प्लेक्स परियोजना और कोठा बैराज** का निर्माण।
- **परियोजना के लाभ**:
    - **सिंचाई**: 10.62 लाख हेक्टेयर (मध्य प्रदेश में 8.11 लाख हेक्टेयर**;** उत्तर प्रदेश में 2.51 लाख हेक्टेयर)।
    - **पेयजल**: 62 लाख लोग।
    - **बिजली उत्पादन**: 103 मेगावाट जल विद्युत**,** 27 मेगावाट सौर ऊर्जा।
- **केन नदी:** यह नदी **कटनी जिले (मध्य प्रदेश) के अहिरगवां के पास** से निकलती है और उत्तर प्रदेश के चिल्ला गांव (बांदा) में यमुना में मिलने से पहले **427 किमी**. की दूरी तय करती है।
- **बेतवा नदी**: यह **विंध्य पर्वतमाला (होशंगाबाद**, **मध्य प्रदेश के पास)** से निकलती है और **हमीरपुर (उत्तर प्रदेश) में यमुना** में मिलने से पहले **590 किमी** की दूरी तय करती है।

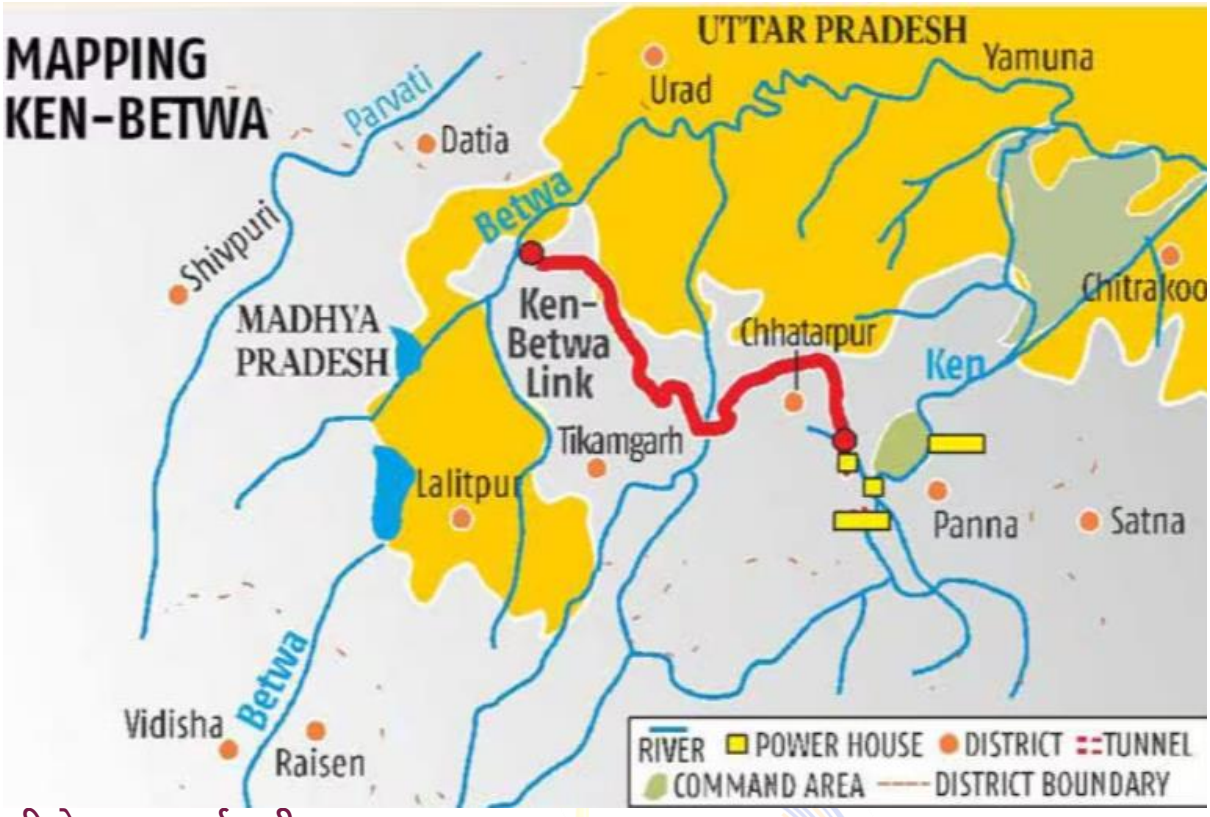

परियोजना का पर्यावरणीय प्रभाव

- **पन्ना टाइगर रिजर्व**: इस परियोजना से **टाइगर रिजर्व का 10% से अधिक मुख्य क्षेत्र (98 वर्ग किमी) जलमग्न हो जाएगा।**
    - **प्रभाव**: बाघों के पुनःप्रवेश की सफलता को कमजोर करता है (2009 में बाघ स्थानीय रूप से विलुप्त हो गए, लेकिन जनसंख्या पुनः प्राप्त हो गई)। **बड़े पैमाने पर वनों की कटाई: 2-3 मिलियन वृक्ष।**
- **वन्यजीवों के लिए खतरे:** यह **केन घड़ियाल अभयारण्य में घड़ियाल आबादी को भी प्रभावित करेगा।**
- **वर्षा पर प्रभाव**: आईआईटी-बॉम्बे के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि नदी-जोड़ो परियोजनाओं के हिस्से के रूप में बड़ी मात्रा में जल को स्थानांतरित करने से स्थल-वायुमंडल के परस्पर संबंध और प्रतिक्रिया प्रभावित हो सकती है, जिससे **सितंबर में माध्य वर्षा में 12% तक की कमी हो सकती है।**

स्रोत:

- [द हिंदू - ₹45,000 करोड़ की केन-बेतवा लिंक परियोजना शुरू]

कार्यकर्ता, चुनाव आयोग के चुनाव नियमों में संशोधन का विरोध क्यों कर रहे हैं?

संदर्भ

केंद्रीय विधि मंत्रालय ने **चुनाव संचालन नियम, 1961 के नियम 93(2)(a)** में संशोधन किया है। यह कुछ चुनावी दस्तावेजों और इलेक्ट्रॉनिक डेटा तक जनता की पहुँच को प्रतिबंधित करता है। विपक्षी दलों ने इस संशोधन के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की है।

संशोधन के बारे में -

- चुनाव संचालन के लिए प्रक्रियाएं प्रदान करने के लिए जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के तहत चुनाव संचालन नियम, 1961 बनाए गए हैं।
- **नियम – 93 में सुधार:**
    - **पिछला नियम 93:** चुनाव से संबंधित सभी "कागज़ातों" तक सार्वजनिक पहुंच की अनुमति दी गई।
    - **संशोधित नियम 93**: केवल उन दस्तावेजों तक पहुंच को सीमित करता है जिनका नियमों में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है, सीसीटीवी फुटेज, वेबकास्टिंग क्लिप और वीडियो रिकॉर्डिंग जैसे इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड को छोड़कर।
    - **नामांकन प्रपत्र, परिणाम और चुनाव खाता विवरण सुलभ रहेंगे।**
- **संशोधन के अपवाद**:
    - **दस्तावेजों तक उम्मीदवारों की पहुँच**: **संशोधन चुनावों में उम्मीदवारों की पहुँच को प्रतिबंधित नहीं करता है।** उम्मीदवारों को अभी भी अपने निर्वाचन क्षेत्र के सीसीटीवी फुटेज और अन्य इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड सहित चुनाव से संबंधित सभी दस्तावेजों को एक्सेस करने का अधिकार है।
    - **दस्तावेजों तक सार्वजनिक पहुंच**: आम जनता के लिए सीसीटीवी फुटेज जैसे इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड तक पहुंच सीमित है और अब इसे केवल न्यायालय के हस्तक्षेप के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।
- **संशोधन के लिए चुनाव आयोग का औचित्य**:
    - **निजता और सुरक्षा संबंधी चिंताएं:** चुनाव आयोग ने तर्क दिया कि सीसीटीवी फुटेज को सार्वजनिक रूप से साझा करने से मतदान की निजता से समझौता हो सकता है, विशेष रूप से जम्मू और कश्मीर या नक्सल प्रभावित क्षेत्रों जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में, जहाँ मतदाताओं की सुरक्षा को खतरा हो सकता है।
    - **डेटा का दुरुपयोग**: ऐसी चिंताएं थीं कि इस तरह के फुटेज को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करके भ्रामक आख्यान बनाने के लिए हेरफेर किया जा सकता है, जो चुनाव प्रक्रिया की सत्यनिष्ठा पर सवाल उठा सकता है।

चिंताएं

- **जानने का अधिकार:** नियम **93**, चुनाव में सूचना के अधिकार अधिनियम के विस्तार के रूप में कार्य करता है। कार्यकर्ताओं ने तर्क दिया है कि, पहुंच को प्रतिबंधित करना नागरिकों के चुनावी प्रक्रिया की जांच करने के अधिकार का उल्लंघन करता है।
- **दस्तावेज़ नियमों में निर्दिष्ट नहीं हैं:** मुख्य दस्तावेज़ (उदाहरण के लिए, मतदाता मतदान और वितरित टोकन का विवरण देने वाली पीठासीन अधिकारियों की डायरियाँ) **ECI** मैनुअल और हैंडबुक में हैं, आधिकारिक नियमों में नहीं। संशोधन संभावित रूप से इन महत्वपूर्ण दस्तावेजों तक पहुंच को सीमित करता है।
- **एकतरफा निर्णय:** भारत के निर्वाचन आयोग ने हितधारकों से परामर्श किए बिना, एकतरफा निर्णय लिया है।

स्रोत:

- द हिन्दू - कार्यकर्ता चुनाव आयोग के चुनाव नियम संशोधन का विरोध क्यों कर रहे हैं?

क्वांटम कम्प्यूटिंग

संदर्भ

क्वांटम यांत्रिकी के सिद्धांतों, जैसे सुपरपोजिशन और एन्टेंगलमेंट द्वारा संचालित क्वांटम कंप्यूटर, क्लासिकल प्रणालियों से बेहतर कम्प्यूटेशनल सफलताओं का वादा करते हैं। यद्यपि उच्च लागत, त्रुटि दर और मापनीयता जैसी चुनौतियाँ, उनके व्यापक रूप से अपनाए जाने में बाधा उत्पन्न करती रहती हैं।

क्वांटम कंप्यूटिंग की मूल बातें -

- **क्लासिकल कम्प्यूटर:**
  - ये शास्त्रीय भौतिकी के सिद्धांतों पर कार्य करते हैं। **उनकी मौलिक कंप्यूटिंग इकाई बिट है।**
  - प्रत्येक बिट दो संभावित मानों, 0 या 1, के साथ सूचना के एक टुकड़े का प्रतिनिधित्व करता है। वे जानकारी को प्रस्तुत करने और संसाधित करने के लिए एक बाइनरी सिस्टम का उपयोग करते हैं।
- **क्वांटम कंप्यूटर:**
  - क्वांटम कंप्यूटिंग, सूक्ष्म स्तर पर इलेक्ट्रॉनों या फोटॉनों जैसे उप-परमाणु कणों के असामान्य व्यवहार का उपयोग करता है।
  - **यह क्वांटम बिट्स (क्यूबिट) का उपयोग करता है, जो एक साथ 0, 1 या दोनों अवस्थाओं में उपस्थित हो सकते हैं (एक गुण जिसे सुपरपोजिशन कहा जाता है)।**
  - **सुपरपोजिशन(Superposition):** एक क्यूबिट एक साथ कई मान रखता है, जिससे एक साथ गणनाएँ संभव होती हैं। यह क्वांटम कंप्यूटर को क्लासिकल कंप्यूटर की तुलना में कई गुना अधिक डेटा संसाधित करने की अनुमति प्रदान करता है।
    - उदाहरण के लिए घूमता हुआ सिक्का, मापे जाने तक, हेड और टेल दोनों को दर्शाता है।
  - **एन्टेंगलमेंट(Entanglement)**: क्यूबिट बड़ी दूरी पर भी आंतरिक रूप से जुड़े हो सकते हैं। एक क्यूबिट को मापने से उसके उलझे हुए साथी के संदर्भ में तुरंत जानकारी मिल जाती है। **एन्टेंगलमेंट** एक साथ सूचना साझा करने की सुविधा प्रदान करता है, जिससे गणनाओं में तीव्रता आती है।
    - उदाहरण के लिए- अलग-अलग बक्सों में रखे दो दस्तानों को देखकर पता चलता है कि एक बायां है, जबकि दूसरा दायां है।
- ये सिद्धांत क्वांटम कंप्यूटर को क्लासिकल कंप्यूटर की तुलना में बहुत तीव्रता से गणना करने की अनुमति प्रदान करते हैं।

क्वांटम कंप्यूटिंग की सीमाएँ

- **उच्च लागत और जटिलता:** क्वांटम कंप्यूटर का निर्माण और रखरखाव महंगा एवं तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण है।
- **त्रुटि दर और स्थिरता:** पर्यावरणीय अंतःक्रियाओं (डीकोहेरेंस) के कारण क्यूबिट में त्रुटियां होने की संभावना रहती है। सुपरपोज़िशन बनाए रखने के लिए, परिष्कृत त्रुटि सुधार तंत्र की आवश्यकता होती है।
- **स्केलेबिलिटी**: दवा की खोज या खगोलीय रहस्यों को सुलझाने जैसे व्यावहारिक अनुप्रयोगों के लिए लाखों क्यूबिट की आवश्यकता होती है, जो वर्तमान क्षमताओं से कहीं अधिक है।

राष्ट्रीय क्वांटम मिशन(National Quantum Mission)

- **लॉन्च: 2023** में
- **नोडल मंत्रालय:** विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
- **मिशन के उद्देश्य:**
  - सुपरकंडक्टिंग और फोटोनिक तकनीक का उपयोग करके, आठ वर्षों के भीतर **50-1000** क्यूबिट वाले क्वांटम कंप्यूटर विकसित करना।
  - भारत के भीतर **2000** किलोमीटर की सीमा में, ग्राउंड स्टेशनों पर सुरक्षित उपग्रह-आधारित क्वांटम संचार लागू करना।

संघ लोक सेवा आयोग विगत वर्ष के प्रश्न

प्रश्न: "क्यूबिट" (qubit) शब्द का उल्लेख निम्नलिखित में कौन-से एक संदर्भ में होता है? (2022)

(a) क्लाउड सेवाएँ
(b) क्वांटम कम्प्यूटिंग
(c) दृश्य प्रचार संचार प्रौद्योगिकियाँ
(d) बेतार संचार प्रौद्योगिकियाँ

उत्तर: (**b**)

स्रोत:

- [द हिन्दू - क्वांटम कंप्यूटिंग क्या है?]

महाराष्ट्र सरकार ने बचाए गए 39 मजदूरों को 86 लाख रुपये का मुआवजा जारी किया

संदर्भ

महाराष्ट्र सरकार ने 2023 में अहिल्या नगर (पहले अहमदनगर) में बंधुआ मजदूरी से बचाए गए 39 लोगों को 86 लाख रुपये का मुआवजा जारी किया है।

बंधुआ मजदूरों के पुनर्वास के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना (CRBL) के बारे में

- **CRBL भारत सरकार द्वारा भारत में बंधुआ मजदूरी को समाप्त करने के लिए शुरू की गई एक योजना है। यह बचाए गए बंधुआ मजदूरों के पुनर्वास के लिए वित्तीय सहायता और अन्य सहायता प्रदान करती है।**
- इसे पहली बार 1978 में लॉन्च किया गया था और आखिरी बार 2016 में इसे नया रूप दिया गया था।
- **नोडल मंत्रालय:** श्रम और रोजगार मंत्रालय
- **घटक:**
    - **वित्तीय सहायता:** वयस्क पुरुषों के लिए 1,00,000 रुपये, विशेष श्रेणियों (बच्चों, महिलाओं, आदि) के लिए 2,00,000 रुपये और गंभीर मामलों (जैसे यौन शोषण या तस्करी) के लिए 3,00,000 रुपये।
    - **गैर-नकद सहायता:** आवास-स्थल आवंटन, भूमि विकास, कम लागत वाले आवास, पशुपालन सहायता, मजदूरी रोजगार, शिक्षा और आवश्यक वस्तुओं तक पहुंच।
- श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के माध्यम से जिला राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजना समितियों एवं जिला परियोजना समितियों को धनराशि जारी की जाती है।
- राज्य सरकारें तत्काल राहत प्रदान करने के लिए जिला बंधुआ श्रमिक पुनर्वास कोष (न्यूनतम 10 लाख रुपये) बनाने के लिए जिम्मेदार हैं।

स्रोत:

- [द हिंदू - बचाए गए 39 मजदूरों को 86 लाख रुपये का मुआवजा]

समाचार में स्थान

पक्तिका प्रांत

- हाल ही में पाकिस्तानी सेना ने अफगानिस्तान के पक्तिका प्रांत में हवाई हमले किए

- **स्थान:** पूर्वी अफ़गानिस्तान में, पाकिस्तान की सीमा पर।
- **महत्व:** डूरंड रेखा के निकट होने के कारण पक्तिका एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण प्रांत है, जिसके कारण आतंकवादियों के लिए अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच घुसपैठ करना आसान हो जाता है।
- **डूरंड रेखा:** यह अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच अंतर्राष्ट्रीय सीमा है।

स्रोत:

- इंडियन एक्सप्रेस - अफगानिस्तान में पाकिस्तान के हवाई हमले

किलाउआ ज्वालामुखी

- हाल ही में हवाई के बिग आइलैंड पर किलाउआ ज्वालामुखी फटा।

- **स्थान:** यह हवाई द्वीप के दक्षिण-पूर्वी तट पर स्थित है।
- यह विश्व के सर्वाधिक सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक है।
- **ज्वालामुखी विस्फोट:** ज्वालामुखी विस्फोट के दौरान उत्सर्जित 99% गैस अणु जल वाष्प, CO2 और SO2 होते हैं।
- शेष 1% हाइड्रोजन सल्फाइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, हाइड्रोजन क्लोराइड, हाइड्रोजन फ्लोराइड आदि की अल्प मात्रा से बना होता है ।

स्रोत:

- द हिन्दू - बिग शॉट

लेसोथो

- भारत ने लेसोथो के लोगों की खाद्य सुरक्षा और पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता के लिए 1,000 मीट्रिक टन चावल की खेप भेजी है।

- **स्थान:** यह दक्षिणी अफ्रीका में एक स्थलरुद्ध देश है। **यह पूरी तरह से दक्षिण अफ्रीका से घिरा हुआ है**, जो इसे विश्व स्तर पर सबसे बड़ा संप्रभु क्षेत्र बनाता है।
- यह मालोटी पर्वत में स्थित है।
- **नदी: ऑरेंज नदी (अफ्रीका की सबसे लंबी नदियों में से एक)** लेसोथो हाइलैंड्स में **सिंकु नदी के रूप में निकलती है।**

स्रोत:

- [डीडी न्यूज- वैश्विक दक्षिण के लिए प्रयास]

संपादकीय सारांश

आपदा प्रबंधन विधेयक में खामियां

संदर्भ

आपदा प्रबंधन (संशोधन) विधेयक, 2024, मौजूदा आपदा प्रबंधन अधिनियम (DMA), 2005 की खामियों को दूर करने में विफल रहने के कारण चिंता पैदा कर रहा है।

विभिन्न चिंताएं क्या हैं?

- **स्थानीय समुदायों पर सीमित ध्यान**: विधेयक में 'पर्यवेक्षण' और 'निर्देश' जैसे समावेशी शब्दों के स्थान पर 'निगरानी' और 'दिशानिर्देश' जैसे शीर्ष-स्तरीय शब्दावली का प्रयोग किया गया है।
    - योकोहामा रणनीति, कार्रवाई के लिए ह्योगो फ्रेमवर्क और आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए सेंडाई फ्रेमवर्क जैसे वैश्विक ढांचे स्थानीय समुदायों को 'प्रथम उत्तरदाताओं' के रूप में जोर देते हैं।
    - **समुदाय-नेतृत्व वाली प्रतिक्रियाओं के उदाहरण:**
        - **चक्रवात आइला (2009, सुंदरबन**): ग्रामीणों ने आधिकारिक एजेंसियों के पहुंचने से पहले ही कार्रवाई की।
        - **केदारनाथ हिमनद झील विस्फोट बाढ़ (2013):** स्थानीय लोगों ने प्रारंभिक बचाव कार्य चलाया।
        - **केरल बाढ़ (2018):** मछुआरों ने बचाव प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **अंतर-विभागीय समावेशिता का अभाव**: यह विधेयक अंतर-विभागीय भेदभाव को दूर करने में विफल रहता है, तथा महिलाओं, दिव्यांग व्यक्तियों, निचली जातियों और LGBTQIA+ समुदायों की कमजोरियों को नजरअंदाज करता है।
    - आपदाओं के दौरान कमजोर समूहों को अक्सर भेदभाव का सामना करना पड़ता है, लेकिन राहत उपायों में उनकी अनदेखी की जाती है।
    - डेटा-सूचित दृष्टिकोण कमजोरियों को समझने और उनका समाधान करने के तरीके में बदलाव ला सकते हैं।
- **कमज़ोर जवाबदेही तंत्र:**
    - **जिला प्राधिकारियों का प्रदर्शन**: जिला प्राधिकारियों की तैयारी या प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए कोई प्रावधान नहीं है।
        - तैयारी में विफलताओं को अक्सर व्यक्तिगत परोपकार के प्रदर्शन के द्वारा छिपा दिया जाता है, जिससे राजनीतिक शोषण का मार्ग प्रशस्त होता है।
    - **महत्वपूर्ण प्रावधानों का लोप**:
        - DMA (राहत और ऋण चुकौती राहत के न्यूनतम मानक) की धारा 12 और 13 को हटा दिया गया है।
        - **धारा 19**, जो राज्य सरकारों को विधवाओं, अनाथों, बेघरों और आजीविका बहाली के लिए अनुग्रह सहायता प्रदान करने का अधिकार देती थी, को हटा दिया गया है।
        - ये परिवर्तन आपदा पीड़ितों के लिए आवश्यक सुरक्षा उपायों को छीन लेते हैं।
    - **एकीकरण और तैयारी संबंधी प्रावधानों को हटाना**:
        - **धारा 35(2b)**: राष्ट्रीय योजनाओं में आपदा प्रबंधन प्रावधानों का अनिवार्य एकीकरण।
        - **धारा 35(2d)**: सरकारी विभागों में सुनिश्चित तैयारी।
        - **उपधारा 22(2a) और 22(2b)**: राज्य कार्यकारी समितियों को तैयारी आकलन करने की आवश्यकता है।

- **पशु कल्याण की उपेक्षा**: आपदाओं के दौरान अक्सर बुरी तरह प्रभावित होने वाले पशुओं पर विधेयक में विचार नहीं किया गया है।
    - जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (DDMA) में **पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) नियम, 2023 को लागू करने की जिम्मेदारी का अभाव है**, जो एक महत्वपूर्ण अंतर को उजागर करता है।
- **शहरी आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (UDMA)**: धारा 41A में UDMA की स्थापना का प्रस्ताव है, लेकिन इसकी आवश्यकता या दायरे पर स्पष्टता का अभाव है।
    - नगर निगम, महत्वपूर्ण राजस्व सृजक के रूप में, पहले से ही शहरी नियोजन का प्रबंधन करते हैं।
    - इन निकायों द्वारा प्रोत्साहित अतिक्रमण से शहरी बाढ़ की समस्या बढ़ती है, तथा आपदा प्रबंधन कमजोर होता है।
- **क्षेत्रीय सहयोग के अवसर चूक गए**: बढ़ती जूनोटिक और एपीज़ोटिक बीमारियों के लिए क्षेत्रीय रणनीतियों की आवश्यकता है।
    - सहयोगात्मक आपदा प्रतिक्रिया के लिए सार्क, बिम्सटेक या ब्रिक्स जैसे क्षेत्रीय समूहों का कोई संदर्भ नहीं।
    - **उदाहरण**:
        - **प्राकृतिक आपदाओं पर त्वरित प्रतिक्रिया पर** 2011 के सार्क समझौते में दक्षिण एशियाई सीमाओं पर साझा तैयारी पर जोर दिया गया है।
        - क्षेत्रीय सहयोग का अभाव सीमापार आपदाओं से प्रभावी ढंग से निपटने की भारत की क्षमता को कमजोर करता है।

स्रोत: द हिंदू: आपदा प्रबंधन विधेयक में खामियां

आईटी क्षेत्र में योग्यता का मिथक, जाति-आधारित असमानताएं

संदर्भ

- भारत का आईटी क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है, को अक्सर योग्यता और समावेशिता का एक मॉडल माना जाता है।
- हालाँकि, हालिया विश्लेषण से पता चलता है कि रोजगार और मजदूरी में जाति और लिंग आधारित असमानताएं लगातार बनी हुई हैं, जो इस क्षेत्र की समावेशी छवि के विपरीत हैं।

समाचार के बारें में और अधिक जानकारी

- अध्ययन में दो NSSO सर्वेक्षणों के डेटा का उपयोग किया गया: 78वां दौर (2020-21) और 68वां दौर (2011-12), जिसमें 29,289 व्यक्तियों का नमूना शामिल था।
- विश्लेषण में रोजगार परिणामों को प्रभावित करने वाले अवलोकनीय कारकों को नियंत्रित किया गया तथा संभाव्यता आकलन के लिए मानक के रूप में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का उपयोग किया गया।

तथ्य

- भारत के सकल घरेलू उत्पाद में **7% से अधिक का** योगदान देता है।
- अपने प्रदर्शन-संचालित, उच्च-भुगतान प्रकृति के कारण यह एक **पसंदीदा कैरियर गंतव्य के रूप में कार्य करता है।**
- उप-सहारा अफ्रीकी देश भारत के आईटी क्षेत्र को सॉफ्टवेयर निर्यात में सफलता दोहराने के लिए एक मॉडल के रूप में देखते हैं।

हालिया विश्लेषण के निष्कर्ष

- **रोजगार संभावनाएँ**:
  - आईटी में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के रोजगार की संभावना 10% है , जबकि उच्च जातियों के लिए यह 27% है।
  - **समय के साथ असमानताएं बढ़ीं:**
    - **2011-12:** निचली जातियों में आईटी क्षेत्र में रोजगार की संभावना 6% थी, जबकि उच्च जातियों के लिए यह 17% थी (11% का अंतर)।
    - **2020-21:** संभावनाएँ बढ़कर 10% और 27% हो गईं, लेकिन अंतर बढ़कर 17% हो गया।
  - यह दर्शाता है कि आईटी क्षेत्र, विकास के बावजूद, बहिष्करणकारी सामाजिक बाधाओं को दूर करने में विफल रहा है।
- **वेतन असमानताएँ:**
  - आईटी में एससी और ओबीसी कर्मचारी उच्च जाति के कर्मचारियों की तुलना में क्रमशः 24.9% और 22.5% कम कमाते हैं।
  - शिक्षा और रोजगार के प्रकार (नियमित बनाम अस्थायी) के समायोजन के बाद भी वेतन अंतर बना रहता है।
  - श्रम बाजार विभाजन को दर्शाता है, निचली जातियों को सीमित गतिशीलता के साथ कम वेतन वाली नौकरी की भूमिकाओं में धकेल दिया गया है।
- **लैंगिक असमानताएं:** आईटी क्षेत्र में महिलाएं, जाति की परवाह किए बिना, पुरुषों की तुलना में **26.2% कम कमाती हैं।**
  - महिलाओं के लिए रोजगार की संभावनाएं पुरुषों के करीब हैं, लेकिन वेतन असमानताएं प्रणालीगत लैंगिक पूर्वाग्रह को उजागर करती हैं।

असमानताओं के निहितार्थ

- **आर्थिक दक्षता**: हाशिए पर पड़े समूहों का बहिष्कार उत्पादकता और दक्षता को कमजोर करता है।
- **सामाजिक न्याय**: श्रम बाजार विभाजन संरचनात्मक बाधाओं को मजबूत करता है और ऊपर की ओर गतिशीलता में बाधा डालता है।
- **विविधता के लिए छूटे अवसर**:
    - **अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (2022)**: कार्यस्थल विविधता उच्च उत्पादकता और नवाचार से संबंधित है।
    - **नेटवर्क फॉर बिजनेस सस्टेनेबिलिटी (कनाडा)**: **नस्लीय विविधता में 1% की वृद्धि से** प्रति वर्ष प्रति कर्मचारी उत्पादकता में $729-$1,590 की वृद्धि होती है।
- **गरीबी का दुष्चक्र**: शिक्षा और कौशल पर असमान लाभ से हतोत्साहित हाशिए पर पड़े समूह गरीबी में फंस गए हैं।

नीतिगत अनुशंसाएँ

- **कार्यबल विविधता प्रकटीकरण:** कंपनियों को अपने कार्यबल विविधता मैट्रिक्स को सार्वजनिक रूप से साझा करने का आदेश देना।
    - जवाबदेही को बढ़ावा देने और विविधता को प्रोत्साहित करने के लिए पारदर्शिता बढ़ाना।
- **निम्न-जाति के उद्यमियों के लिए समर्थन**: उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्रों में उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन और प्रशिक्षण प्रदान करना।
- **कौशल अंतर को पाटना**: हाशिए पर पड़े समूहों के कौशल स्तर को बढ़ाने के लिए लक्षित कार्यक्रमों को लागू करना, ताकि नौकरी बाजार में समान भागीदारी संभव हो सके

स्रोत: द हिंदू: आईटी क्षेत्र में योग्यता का मिथक, जाति-आधारित असमानताएं

विस्तृत कवरेज

2004 के हिंद महासागर भूकंप और सुनामी की 20वीं वर्षगांठ

संदर्भ

26 दिसंबर, 2024, 2004 के हिंद महासागर भूकंप और सुनामी के 20वें वर्ष को चिह्नित करता है।

सुनामी क्या है?

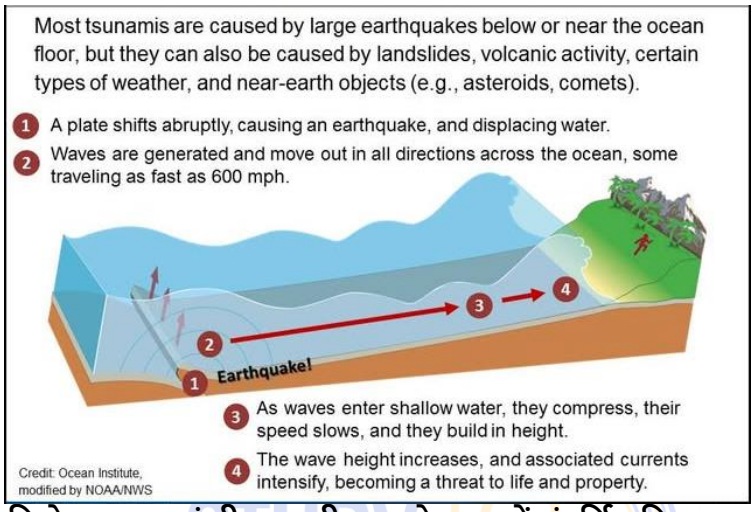

- **सुनामी, जिसे अक्सर भूकंपीय समुद्री लहर के रूप में संदर्भित किया जाता है, यह समुद्र तल पर या समुद्र की सतह के पास अचानक और महत्वपूर्ण गड़बड़ी के कारण उत्पन्न बड़ी समुद्री लहरों की एक श्रृंखला है।**
- "सुनामी" शब्द की उत्पत्ति जापानी शब्दों "त्सू" (अर्थात बंदरगाह) और "नामी" (अर्थात लहर) से हुई है।

सुनामी के कारण

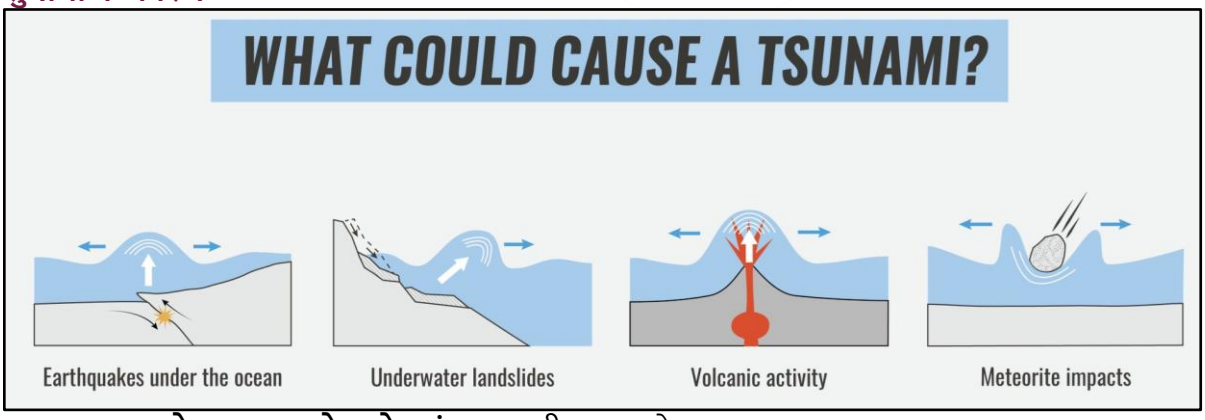

- **समुद्र के अन्दर आने वाले भूकंप**: सुनामी का सबसे आम कारण।
  - यह तब होता है जब टेक्टोनिक प्लेटें अचानक खिसक जाती हैं, जिससे पानी का ऊर्ध्वाधर विस्थापन होता है।
  - आमतौर पर यह सबडक्शन जोन से जुड़ा होता है, जहां एक टेक्टोनिक प्लेट दूसरी के नीचे खिसकती है।

- **ज्वालामुखी विस्फोट**: ज्वालामुखी विस्फोट या पानी के नीचे स्थित ज्वालामुखियों के ढहने से पानी की बड़ी मात्रा विस्थापित हो सकती है।
    - **उदाहरण**: 1883 में क्राकाटोआ के विस्फोट से विनाशकारी सुनामी आई।
- **भूस्खलन**: पनडुब्बी भूस्खलन (पानी के नीचे) या तटीय भूस्खलन से सुनामी उत्पन्न हो सकती है।
    - **उदाहरण**: लिटुआ खाड़ी सुनामी (1958) एक विशाल भूस्खलन के कारण उत्पन्न हुई थी।
- **उल्कापिंड प्रभाव**: दुर्लभ लेकिन विनाशकारी।
    - समुद्र से टकराने वाले बड़े उल्कापिंडों से पानी के अचानक विस्थापन के कारण सुनामी उत्पन्न हो सकती है।

तथ्य

- **अधिकांश सुनामी - लगभग 80 प्रतिशत - प्रशांत महासागर के "रिंग ऑफ फायर" के भीतर आती हैं।**

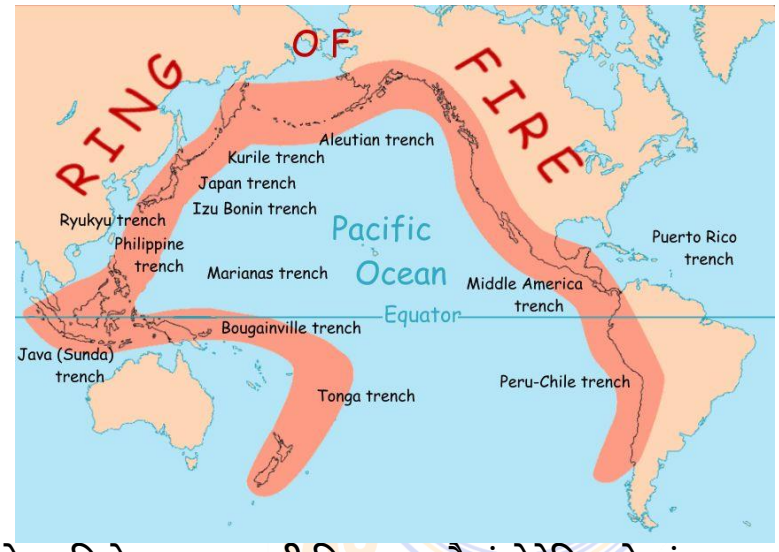

- **क्राकाटोआ, जिसे क्राकाटाऊ भी लिखा गया है, इंडोनेशिया के सुंडा जलडमरूमध्य में स्थित एक काल्डेरा है।**

सुनामी की विशेषताएँ

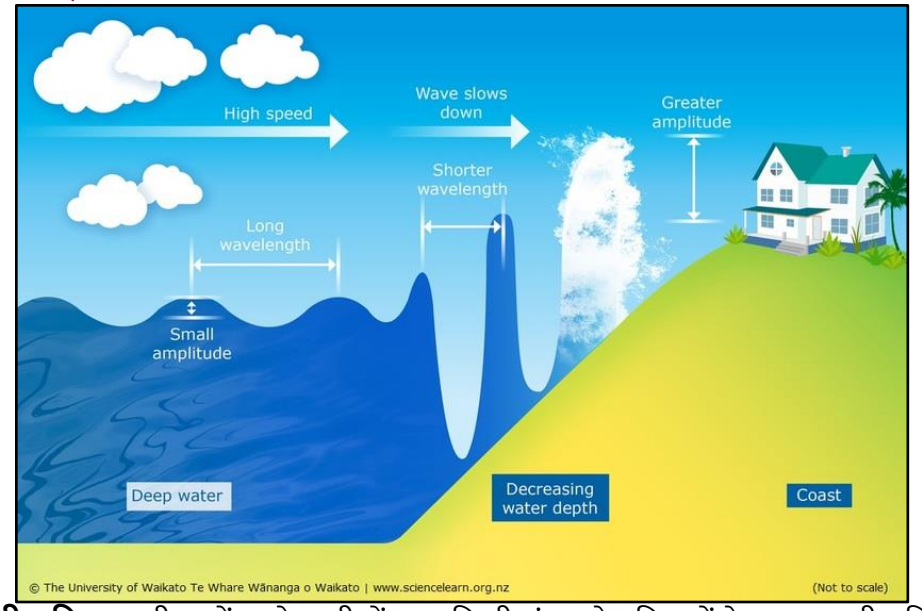

- **लहर की गति**: सुनामी लहरें गहरे पानी में 800 किमी/घंटा (जेट विमानों के समान) की गति से यात्रा कर सकती हैं।
    - जैसे-जैसे लहरें उथले तटीय क्षेत्रों के पास पहुंचती हैं, उनकी गति कम होती जाती है।
- **तरंगदैर्घ्य और आयाम**:
    - **गहरे पानी में**: लंबी तरंगदैर्ध्य (100-500 किमी) और कम आयाम (1 मीटर से कम), जिससे उनका पता लगाना मुश्किल हो जाता है।
    - **तट के निकट: "वेव शॉलिंग"** नामक घटना के कारण छोटी तरंगदैर्घ्य और महत्वपूर्ण रूप से उच्च आयाम (30 मीटर या उससे अधिक तक)।

- लहरों का उथला होना, आकार और व्यवहार में परिवर्तन है, क्योंकि लहरें घटती गहराई वाले पानी में फैलती हैं।
- इसके परिणामस्वरूप तरंग की गति और तरंगदैर्घ्य में कमी आती है जबकि तरंग की ऊंचाई बढ़ जाती है।

- **अनेक तरंगें**: सुनामी प्रायः तरंगों की श्रृंखला (तरंग श्रृंखला) के रूप में आती है, जिनका अंतराल मिनटों से लेकर घंटों तक होता है।
    - पहली लहर हमेशा सबसे बड़ी या सबसे विनाशकारी नहीं होती।

2004 की हिंद महासागर सुनामी

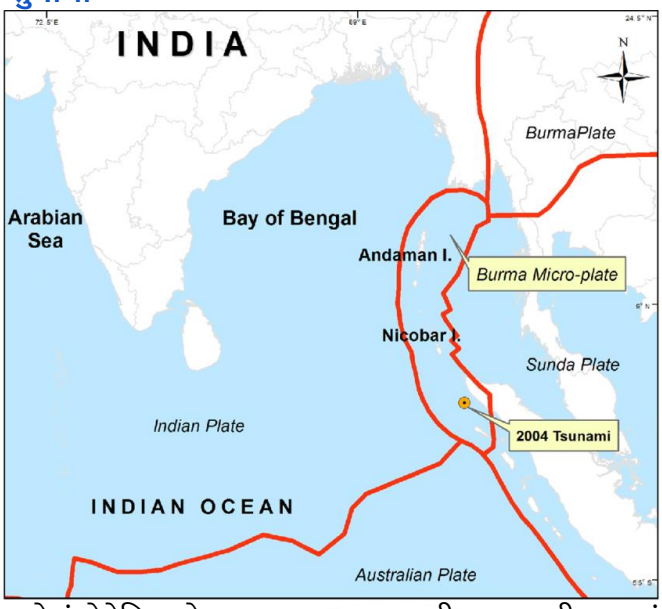

- 26 दिसम्बर 2004 को इंडोनेशिया के सुमात्रा तट पर 9.1 तीव्रता का भीषण भूकंप आया।
- यह घटना 1900 के बाद से विश्व में दर्ज किया गया तीसरा सबसे बड़ा भूकंप था।
- भूकंप की उत्पत्ति समुद्र तल से 30 किलोमीटर की गहराई से हुई, विशेष रूप से सुंडा ट्रेंच में, जहां इंडो-ऑस्ट्रेलियाई प्लेट बर्मा माइक्रोप्लेट के नीचे धंस रही है।

सुनामी के बाद भारत सरकार के कदम

- भारतीय सुनामी प्रारंभिक चेतावनी केंद्र (ITEWC), भारत सरकार के केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा 2007 में स्थापित किया गया।
    - हैदराबाद स्थित भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र (INCOIS) से संचालन।
    - **क्षमताएं**:
        - भूकंपीय और महासागरीय डेटा की 24/7 निगरानी।
        - नीचे दबाव रिकॉर्डर (बीपीआर), ज्वार गेज, और भूकंपीय स्टेशनों से सुसज्जित।
        - आईएमडी और 350 वैश्विक भूकंपीय स्टेशनों से डेटा का वास्तविक समय विश्लेषण।
    - **प्रतिक्रिया समय**: संभावित सुनामी उत्पन्न करने वाले भूकंप की पहचान करने और 10 मिनट के भीतर अलर्ट जारी करने में सक्षम।

2004 की सुनामी से 6 महत्वपूर्ण सबक क्या हैं?

- **प्राकृतिक अवरोधक के रूप में मैंग्रोव का महत्व**: मैंग्रोव प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करके तटीय क्षेत्रों की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि ये लहरों और तूफानी लहरों से बचाव करते हैं। झींगा पालन, पर्यटन और लकड़ी की कटाई जैसी आर्थिक गतिविधियों के लिए इनका विनाश आपदा के प्रभावों को और बढ़ा देता है।
    - यूएनईपी (2005) द्वारा किए गए एक अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि घने मैंग्रोव वनों वाले क्षेत्रों में सुनामी से होने वाली क्षति काफी कम हुई। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु के मैंग्रोव वाले तटीय गांवों में कम हताहतों की सूचना मिली।
    - भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2023 के अनुसार, भारत में मैंग्रोव आवरण 4,991.68 वर्ग किमी है, जो 2021 से 7.43 वर्ग किमी की शुद्ध कमी दर्शाता है।
    - भारत में मैंग्रोव आवरण को बहाल करने के लिए केंद्र सरकार की मैंग्रोव पहल, तटीय आवास और ठोस आय (MISHTI) कार्यक्रम जैसी वनीकरण पहलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

- **सार्वजनिक क्षेत्र में साझा संसाधन रखना:** तटीय भूमि का निजीकरण स्थानीय समुदायों को विस्थापित करता है और पारंपरिक आजीविका को कमजोर करता है, जिससे सामाजिक-आर्थिक कमजोरियां पैदा होती हैं।
    - थाईलैंड में, 1980-90 के दशक के दौरान, निजीकरण के कारण तटीय क्षेत्रों तक सार्वजनिक पहुंच खत्म हो गई, जिससे विस्थापित समुदाय अनौपचारिक, कम वेतन वाली नौकरियों में चले गए। इस संरचनात्मक बदलाव ने वैश्विक आर्थिक रुझानों पर निर्भरता बढ़ा दी, जिससे अस्थिरता पैदा हुई।
    - भारत में, गोवा और केरल जैसे राज्यों में पर्यटन-प्रेरित समुद्र तटों के निजीकरण से मछुआरा समुदायों के विस्थापित होने की समान चिंताएं उत्पन्न हुई हैं।
- **आर्थिक व्यवधान और आजीविका में बदलाव:** सुनामी स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बाधित करती है, जिससे बाजार में विजेता और हारने वाले पक्ष बनते हैं। पारंपरिक आजीविका, जैसे कि कारीगर मछली पकड़ना, अक्सर मशीनी तरीकों से बदल दिया जाता है, जिससे पर्यावरण का क्षरण होता है।
    - तमिलनाडु में, सुनामी के बाद के राहत प्रयासों के कारण मछली पकड़ने की मशीनी पद्धति को बढ़ावा मिला, जिससे पारंपरिक पद्धतियां खत्म हो गईं और अत्यधिक मछली पकड़ने की प्रवृत्ति बढ़ गई।
    - सुनामी प्रभावित क्षेत्रों में भूमि की कीमतें तेजी से बढ़ीं, जिससे संपत्ति मालिकों को लाभ हुआ, लेकिन विस्थापित समुदाय हाशिए पर चले गए।
    - 2006 में (खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा) किए गए एक अध्ययन से पता चला कि भारतीय तटीय मछली पकड़ने वाले समुदायों में से 75% ने आय में कमी और बाहरी बाजारों पर निर्भरता में वृद्धि की बात कही।
- **राहत और पुनर्वास में असमानताओं को संबोधित करना**: राहत प्रयास अक्सर मौजूदा सामाजिक असमानताओं को प्रतिबिंबित करते हैं और उन्हें मजबूत करते हैं, जिसमें हाशिए पर पड़े समूहों को अपर्याप्त समर्थन मिलता है।
    - श्रीलंका में, उत्तर और पूर्व में तमिल अल्पसंख्यकों को अन्य समुदायों की तुलना में अनुपातहीन रूप से कम सहायता प्राप्त हुई।
    - भारत में, दलित और आदिवासी समुदाय, जो मछली पकड़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में मजदूर के रूप में काम करते थे, उन्हें बड़े पैमाने पर मुआवजा पैकेज से बाहर रखा गया था।
- **राहत और पुनर्वास में लिंग संवेदनशीलता**: आपदा पुनर्प्राप्ति के दौरान महिलाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है, जिससे उनकी कमजोरियां और बढ़ जाती हैं।
    - मछली प्रसंस्करण और शंख संग्रहण में शामिल महिलाओं को राहत उपायों से बाहर रखा गया, क्योंकि उनकी परिसंपत्तियां पुरुषों के नाम पर पंजीकृत थीं।
    - मछुआरा समुदायों में विधवाओं को पहचान दस्तावेजों के अभाव के कारण सहायता प्राप्त करने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।
- **सुदृढ़ पुनर्बहाली के लिए स्थानीय संरचनाओं के साथ सहभागिता**: समुदाय-आधारित स्थानीय संस्थाएं, जैसे कि मछली पकड़ने वाली सहकारी समितियां, राहत के आयोजन और लचीलापन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
    - बाह्य लोकतांत्रिक मानदण्डों के लागू होने से प्रायः सामुदायिक एकता बाधित होती है।
        - **उदाहरण के लिए**, पारंपरिक सहकारी प्रथाओं को व्यक्ति-आधारित सहायता वितरण के साथ बदलने के प्रयासों से तनाव और निर्भरता में वृद्धि हुई।
    - राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (एनआईडीएम) द्वारा 2007 में किए गए एक अध्ययन में लैंगिक असमानता जैसे मुद्दों को व्यवस्थित ढंग से सुलझाने के लिए स्थानीय संरचनाओं के साथ दीर्घकालिक सहभागिता की आवश्यकता पर बल दिया गया।

स्रोत:

- [द हिंदू: 2004 के हिंद महासागर भूकंप ने सुनामी विज्ञान को कैसे बदल दिया]
- [द हिन्दू: विभिन्न क्षेत्रों से सबक]